जैसे ओस कहानी

सुरेश कुमार

जैसे ओस कहानी

सुरेश कुमार

सुनिज प्रकाशन

प्रकाशिका :
श्रीमती निर्मल शर्मा
सुनिज प्रकाशन
ज्वालापुरी, जी.टी. रोड,
अलीगढ़—202 001
फोन : 29589

प्रथम संस्करण : फरवरी 1991
मूल्य : तीस रुपये

आवरण : सुरेश कुमार

फोटो टाइप सेटिंग :
ऑफिस फोटो स्टेट प्रिण्टर्स
कनॉट सर्कस, नई दिल्ली—110 001

मुद्रक :
प्रभात ऑफसेट प्रेस
दरियागंज, नई दिल्ली—110 002

आवरण मुद्रक :
संसार प्रिण्टिग प्रेस
अलीगढ़—202 001

JAISE OS KAHANI (POEMS AND SKETCHES)

BY : SURESH KUMAR Rs. 30.00

पूज्य माता-पिता
श्रीमती महादेवी शर्मा
और
श्री शंकरलाल शर्मा
को श्रद्धा और आदर सहित

प्राक्कथन

सत्रहवीं शताब्दी में जापान में आविष्कृत हाइकु एक महत्वपूर्ण काव्य विधा के रूप में मान्यता प्राप्त है। संसार की प्रायः सभी भाषाओं में हाइकु लिखे गये हैं और लिखे जा रहे हैं। हिन्दी में भी अनेक कवियों ने हाइकु रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। लेकिन हिन्दी में इस विधा को अपेक्षित लोकप्रियता प्राप्त नहीं हो सकी। पाँच, सात और पाँच अक्षरों के क्रम से तीन पंक्तियों वाली सत्रह अक्षरी हाइकु रचना अपेक्षाकृत अधिक मानसिक श्रम और कुशलता की माँग करती है। आवश्यक रचना विधान का निर्वाह करते हुए किसी भाव या विचार को अभिव्यक्ति देना और प्रयुक्त शब्दों की आंतरिक लयबद्धता के साथ-साथ उसमें एक संगीतात्मक प्रभाव पैदा करना, जो कि किसी भी श्रेष्ठ कविता का एक प्रमुख गुण है कवि के काव्य कौशल पर निर्भर करता है। छन्द का अनुशासन तोड़ने वाले कुछ नये कवियों ने हाइकु के अनुशासन का निर्वाह करने की कोशिश तो की लेकिन अनेक दृष्टियों से उन्हें यह क्षेत्र संभवतः हिन्दी और संस्कृत के परम्परागत छन्दों से भी अधिक दुःसाध्य प्रतीत हुआ यद्यपि कुछ अच्छी रचनाएँ भी सामने आईं।

जापानी हाइकु कविता मुख्य रूप से ज़ेन साधकों की अभिव्यक्ति का माध्यम रही है। इसीलिए उसमें दार्शनिकता की झलक अधिक दिखाई देती है। इस रचना विधान के माध्यम से जीवन की विविध अनुभूतियों को सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की जा सकती है, इसे भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता। प्रस्तुत संग्रह 'जैसे ओस कहानी' में हाइकु काव्य विधा की छप्पन रचनाएँ संग्रहीत हैं। जिनमें जीवन के विभिन्न क्षणों की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति देने की कोशिश की गई है। परम्परागत हाइकु रचनाओं से इनका वस्तु बोध भिन्न हो सकता है। प्रयास कहाँ तक सफल हुआ है, इसका निर्णय तो सुधी समीक्षक और पाठक ही करेंगे।

इसी संग्रह में छप्पन रेखांकन भी दिये गये हैं। जिनके विषय में यह स्पष्टीकरण आवश्यक है कि वे इन हाइकु रचनाओं के 'इलस्ट्रेशन्स' नहीं हैं। इन रेखांकनों के माध्यम से आज के मानव की पीड़ा, घुटन, संत्रास, अंतर्द्वन्द्व, अकेलेपन और कुण्ठा को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया गया है। इनमें मेरे कलाकार मन की कल्पनाशीलता का कोई हस्तक्षेप नहीं है। ये सारे विषय उसी वातावरण से आये हैं, जिसमें हम सभी सांस लेने और जीने के लिए अभिशप्त हैं। कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अभिव्यक्त करने की हाइकु की जो विशिष्टता है, जिसमें कहे गये की अपेक्षा अनकहा अधिक महत्वपूर्ण होता है, उसी प्रकार का प्रयास इन रेखांकनों में भी किया गया है कि कम से कम रेखाओं द्वारा अधिक से अधिक अभिव्यक्त किया जा सके। प्रयास की सफलता का आकलन तो कला मर्मज्ञों और कला प्रेमियों को ही करना है।

अस्तु, संग्रह आपके हाथों में है और विश्वास है कि यह प्रयास आपको सार्थक लगेगा।

महाशिवरात्रि
12 फरवरी 1991
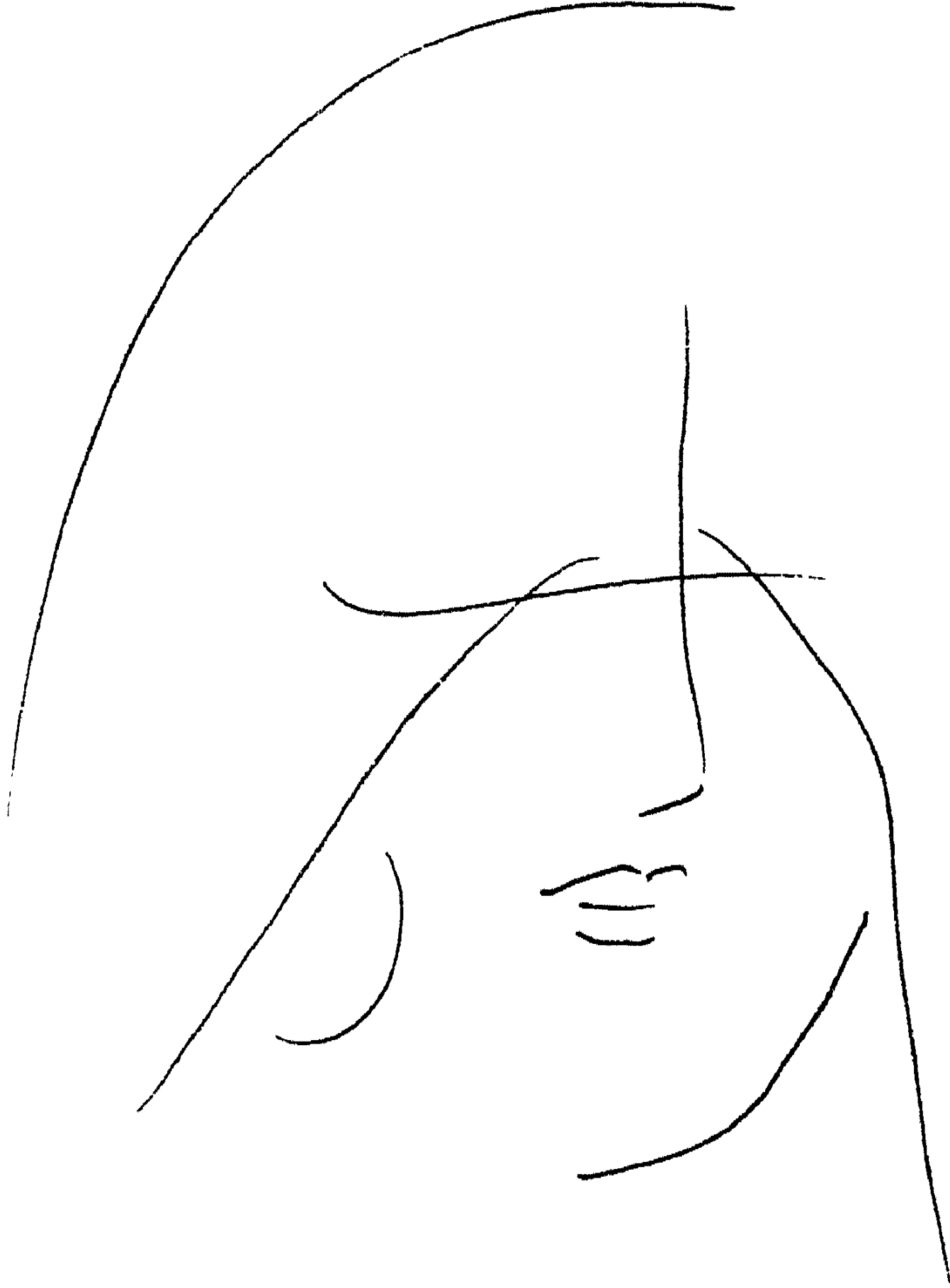
[1]

दुनिया फ़ानी
लिखे फूल पे जैसे
ओस कहानी

[2]

शाम हुई है
और मन अपना
छुईमुई है

[3]

किसी के ख़्वाब
काहे को हम हुए
रोज़ ही टूटे
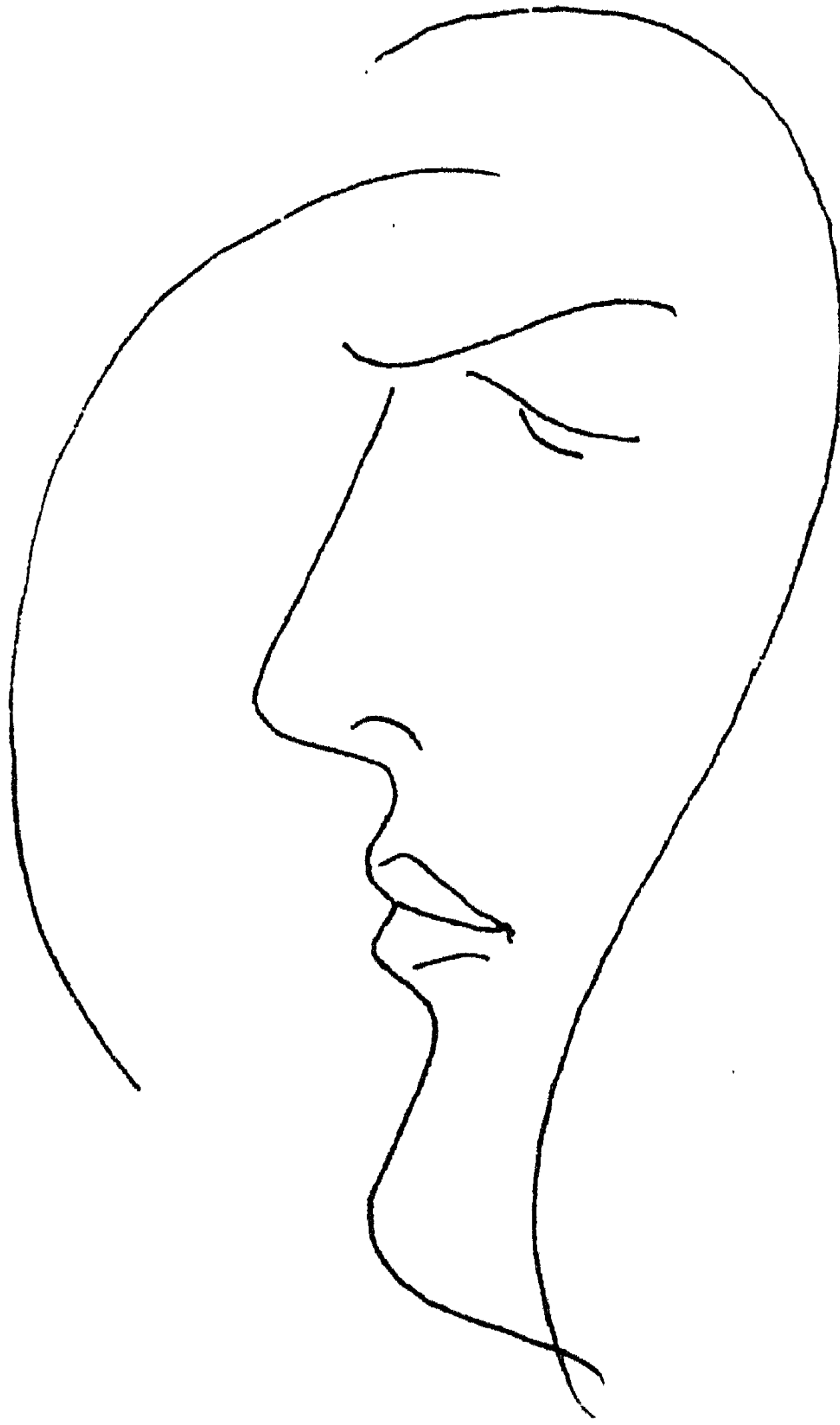
[4]

वही कहानी
फिर उभर आयी
चोट पुरानी

[5]

माँ का दुलार
जैसे रिमझिम में
हरसिंगार

[6]

आकाश गिरा
मैं उसे ओढ़कर
ऊपर उठा
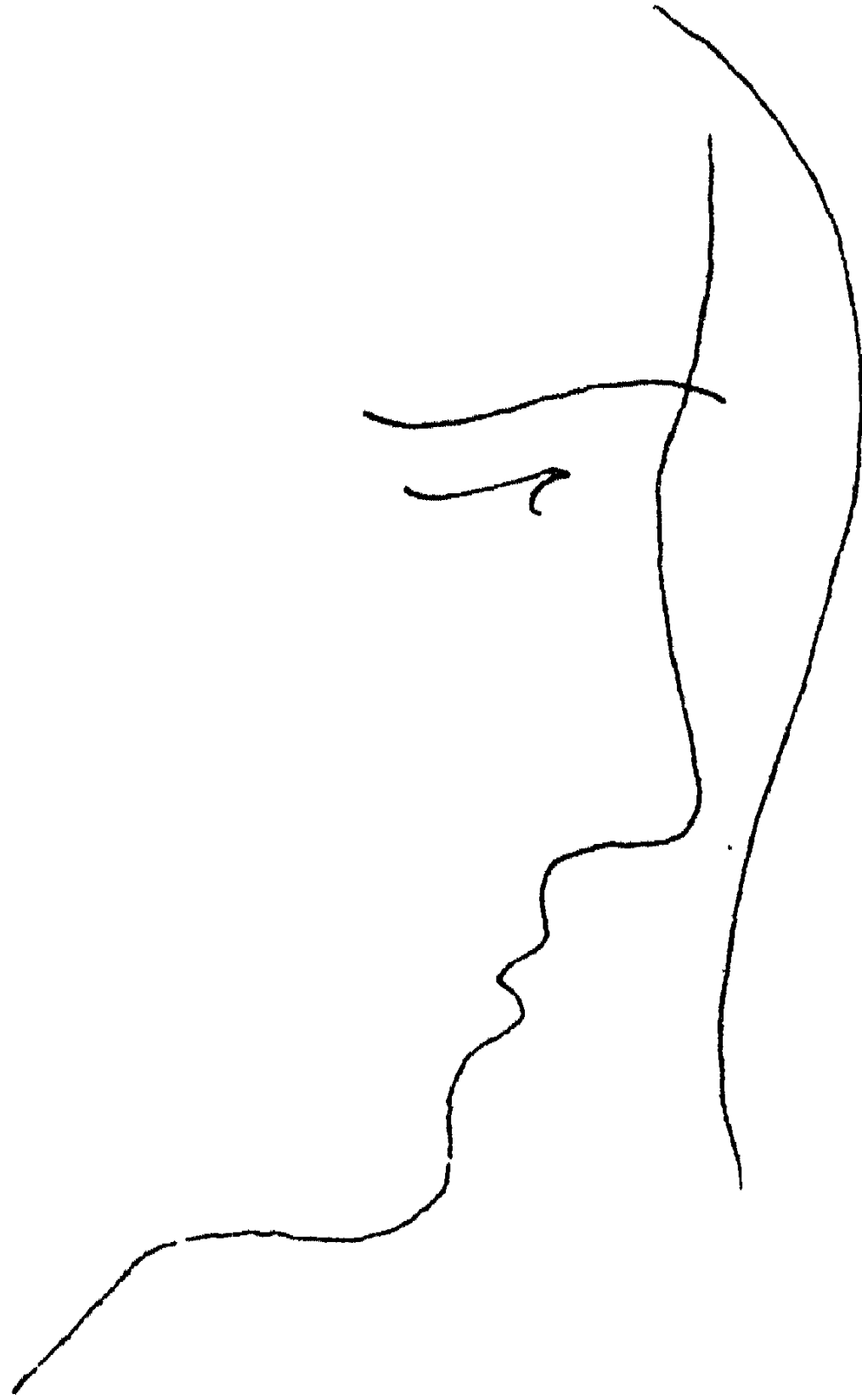
[7]

उंगलियों पे
तितली बना गयी
रंगों के घर

[8]

सूना घर था
सारा दारोमदार
दिये पर था

[9]

तुम्हें ढूँढने
चन्दा-तारे मुझमें
लगे डूबने

[10]

मेरी उमंगें
नभ से कटकर
गिरी पतंगें

[11]

लिखा नदी ने
चट्टानों पर, मुझे
पढ़ा तुम्ही ने
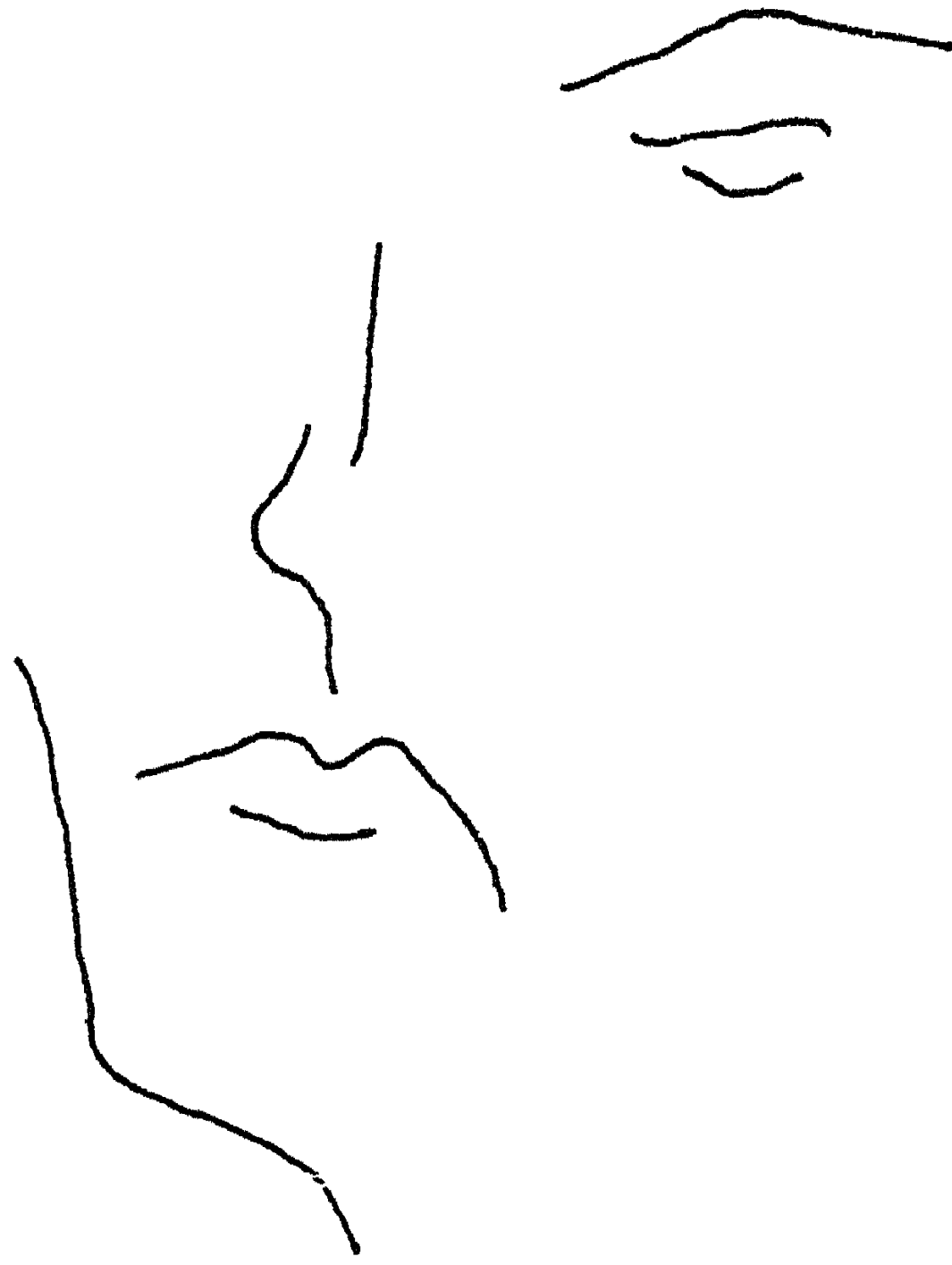
[12]

जो ख़ुद जला
सूर्य उगाने वाला
वही निकला

[13]

ख़ुद में खोये
हम जंगल में भी
जंगल हुए
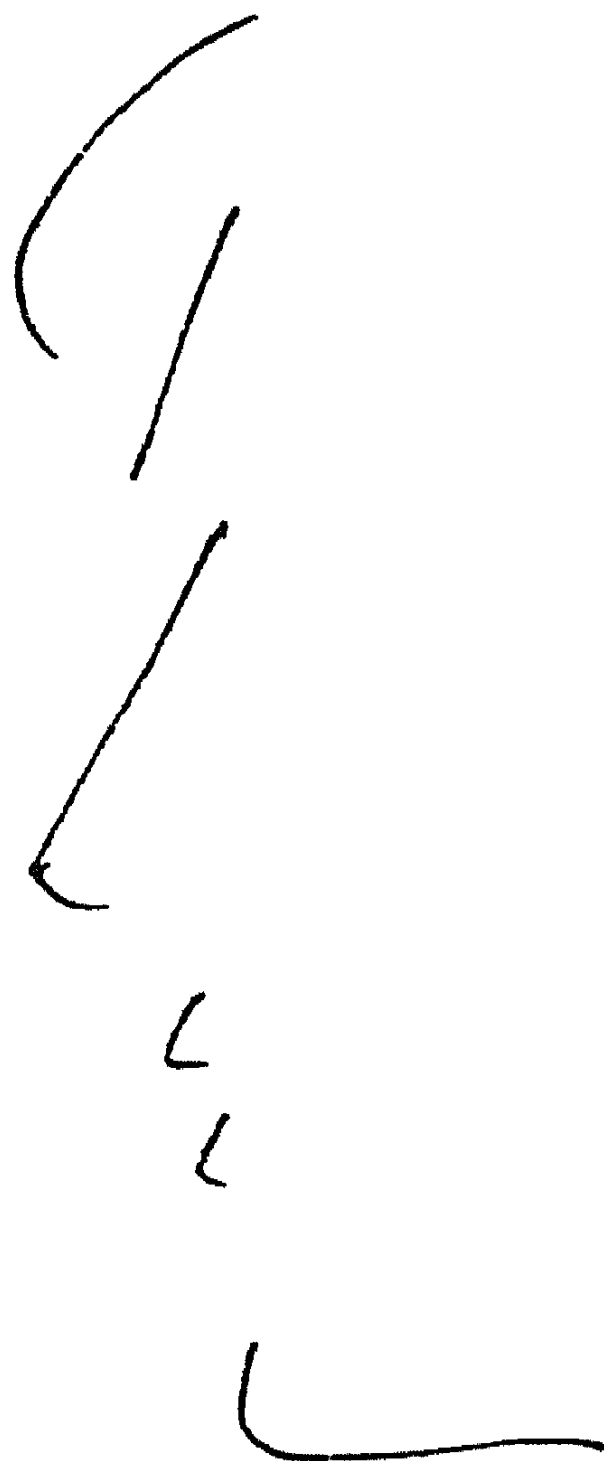
[14]

खिड़की खुली
कमरे की चुप्पी में
आवाज़ घुली

[15]

कितने तीखे
मौसम गुज़रे हैं
काँटों सरीखे

[16]

जंगल, घर,
नदी, सड़क सब
मेरे भीतर
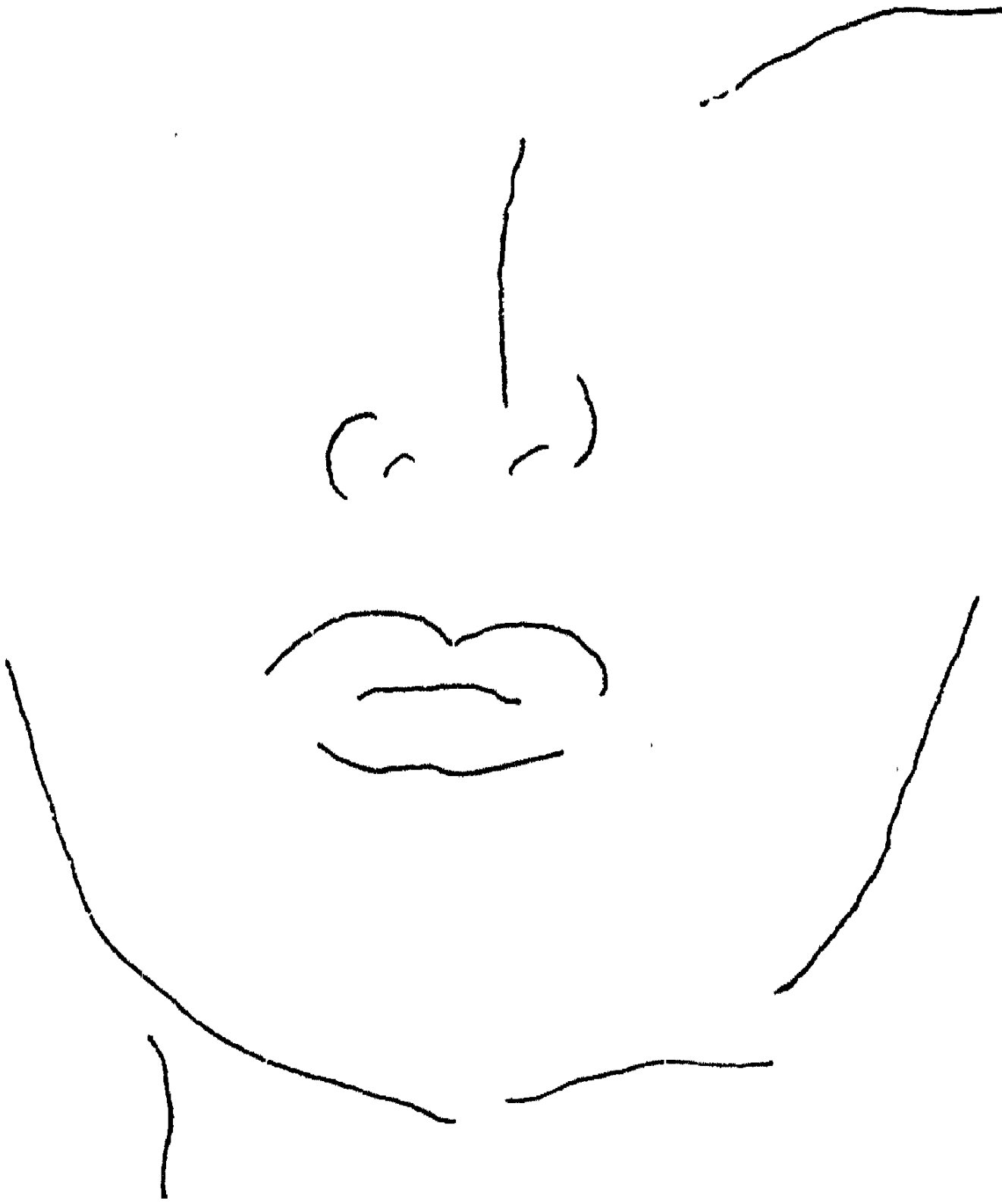
[17]

बाहर तुम
भीतर भी तुम्हीं हो
मैं कहाँ हूँ
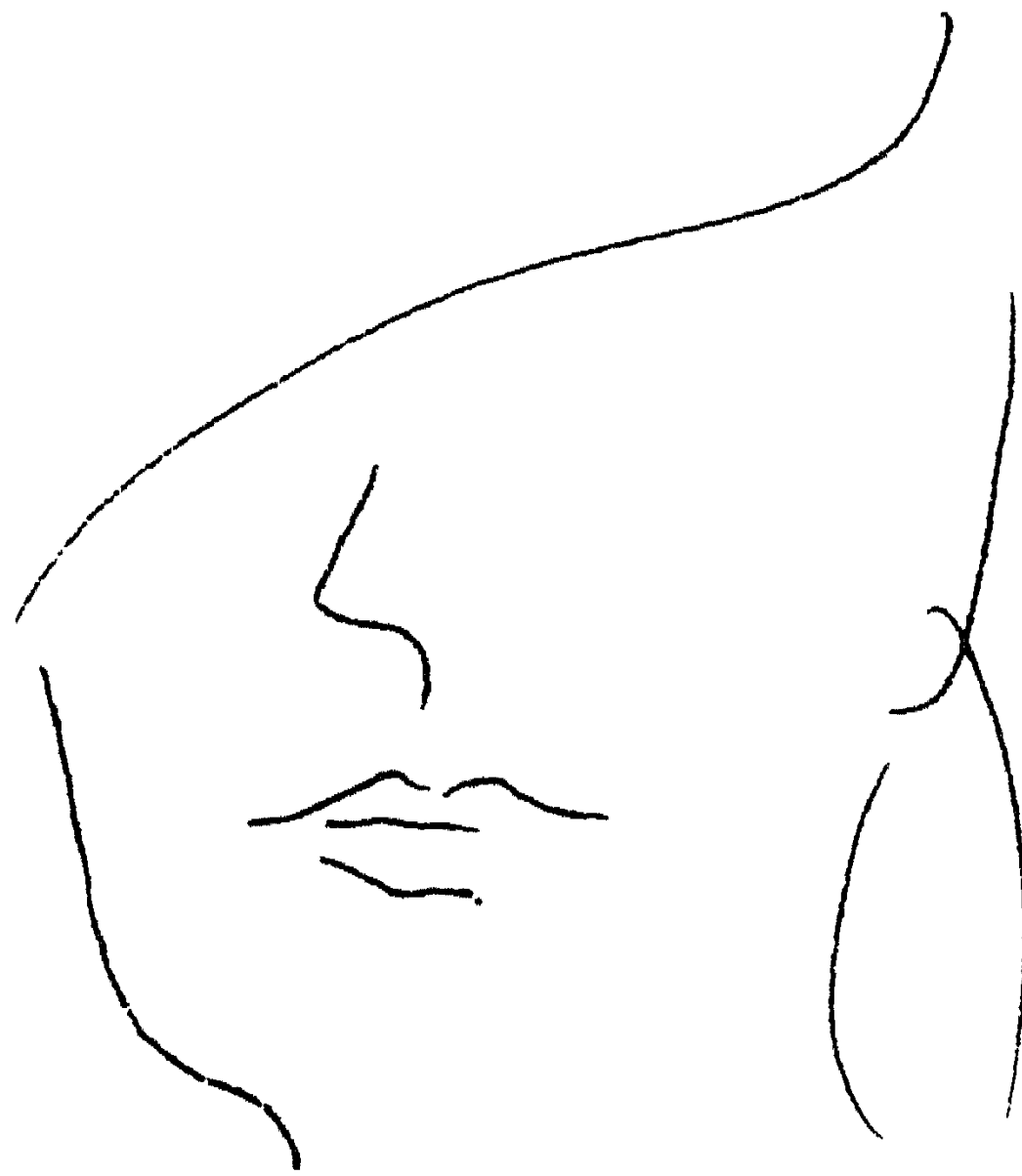
[18]

सूरज डूबा
सुबह-सुबह ही
रात हो गयी

[19]

नाव न डूबी
मैं नाव में ही डूबा
काफ़ी गहरा
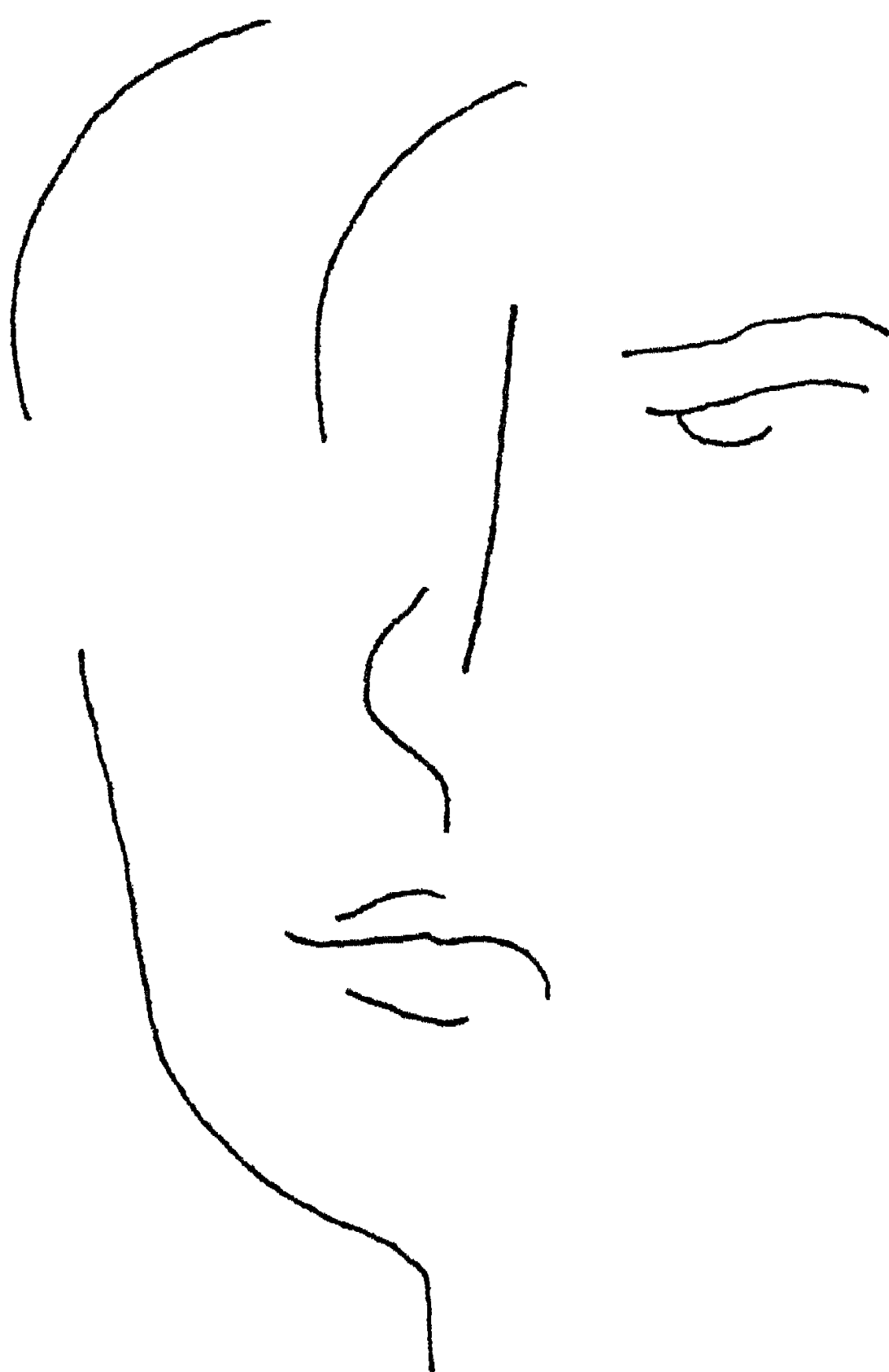
[20]

काग़ज़ी नाव
दिन भर अकेली
तैरती रही

[21]

आग के आगे
मोम पिघला नहीं
कौन थे तुम

[22]

सब देखेंगे
आँधी जब आयेगी
पेड़ गिरेंगे

[23]

धुआँ ही धुआँ
यही शहर तो है
मेरा अपना

[24]

मुझसे तुम
मीलों दूर थे
मैं कोसों पास

[25]

हाँ, यही हुआ
उस रोज़ कि चन्दा
झील हो गया

[26]

सुख ही बाँटे
पलकों से हैं चुने
राह के काँटे

[27]

धार हुआ मैं
बिन तैरे नदी के
पार हुआ मैं

[28]

तपती ज़मीं
नेह की बूँदें जैसे
पिघले हमीं

[29]

बड़ी नमी है
मुझको छू के कोई
नदी गयी है

[30]

न रही आब
ख़ुशबू सफ़र में
सूखा गुलाब

[31]

वो दोपहर
मई जून की, मैं हूँ
गुलमोहर
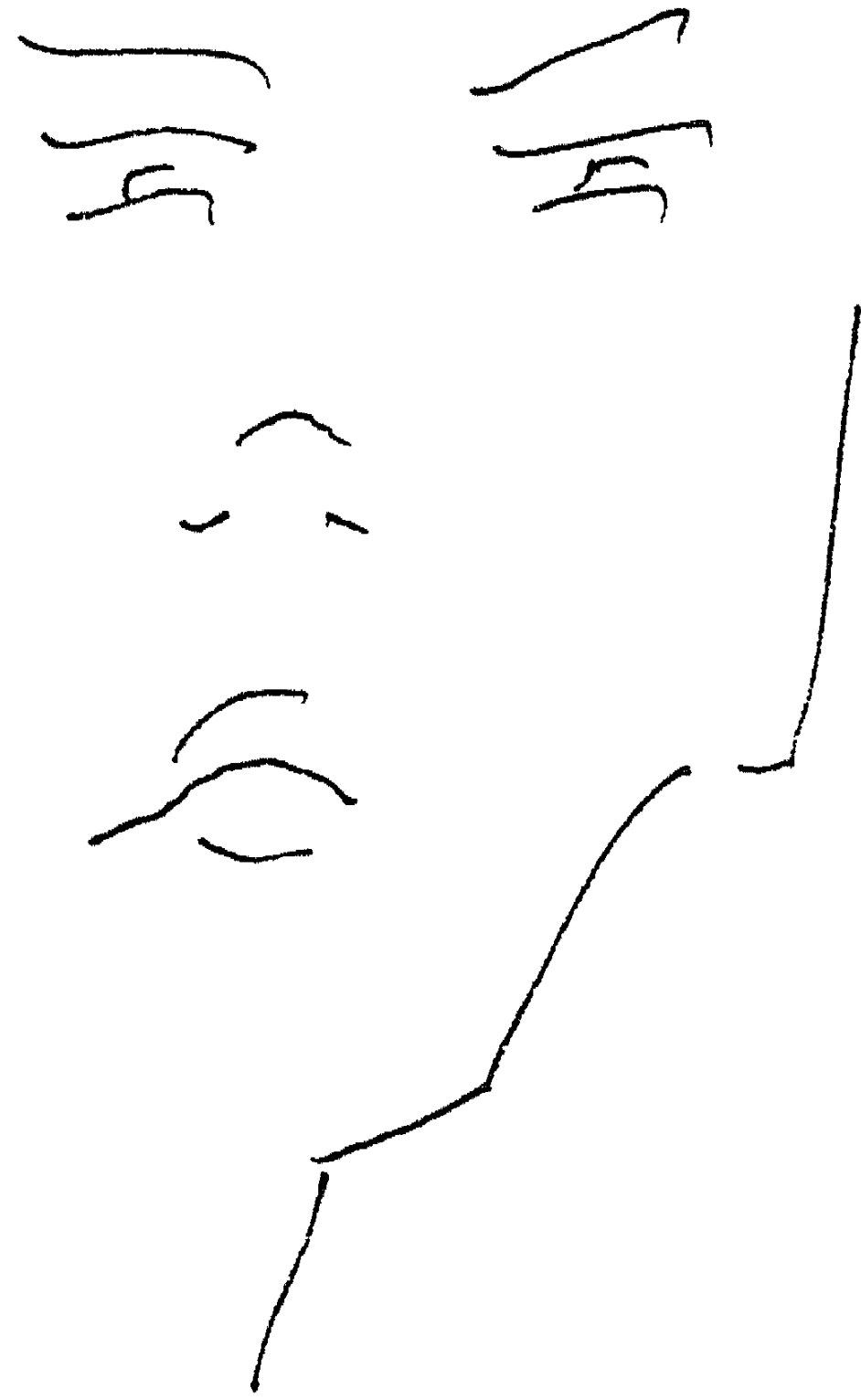
[32]

औरों से दुख
लेकर मिलता है
मुझको सुख

[33]

रस घोलेगी
ख़ामोशी बोलेगी तो
सच बोलेगी
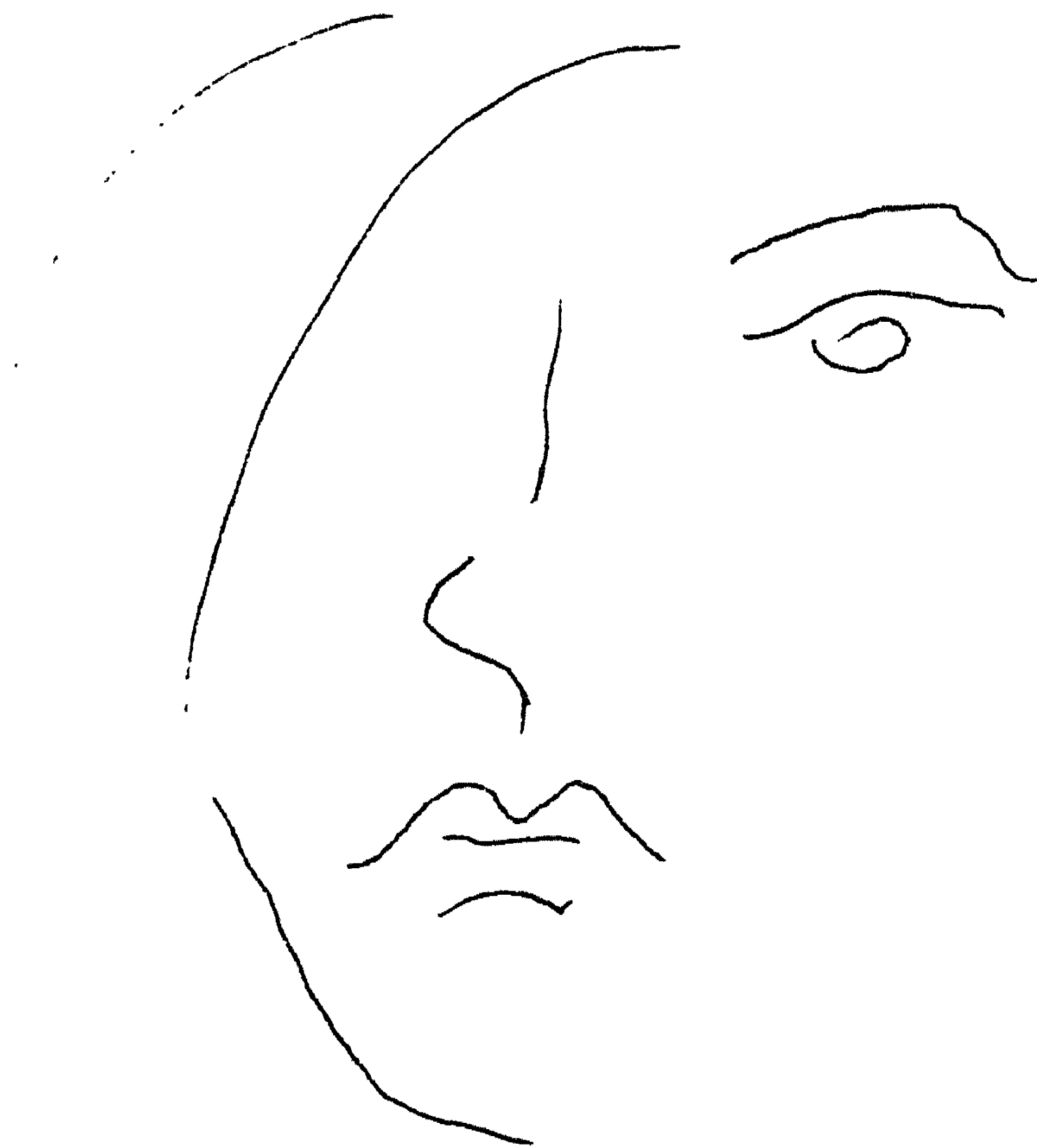
[34]

आये तो आये
चाहे सुख या दुख
जाये तो जाये

[35]

सोचे चिड़िया
काश गगन पर
नीड़ हो मेरा

[36]

वह धूप थी
देह से आत्मा तक
गुनगुनी-सी
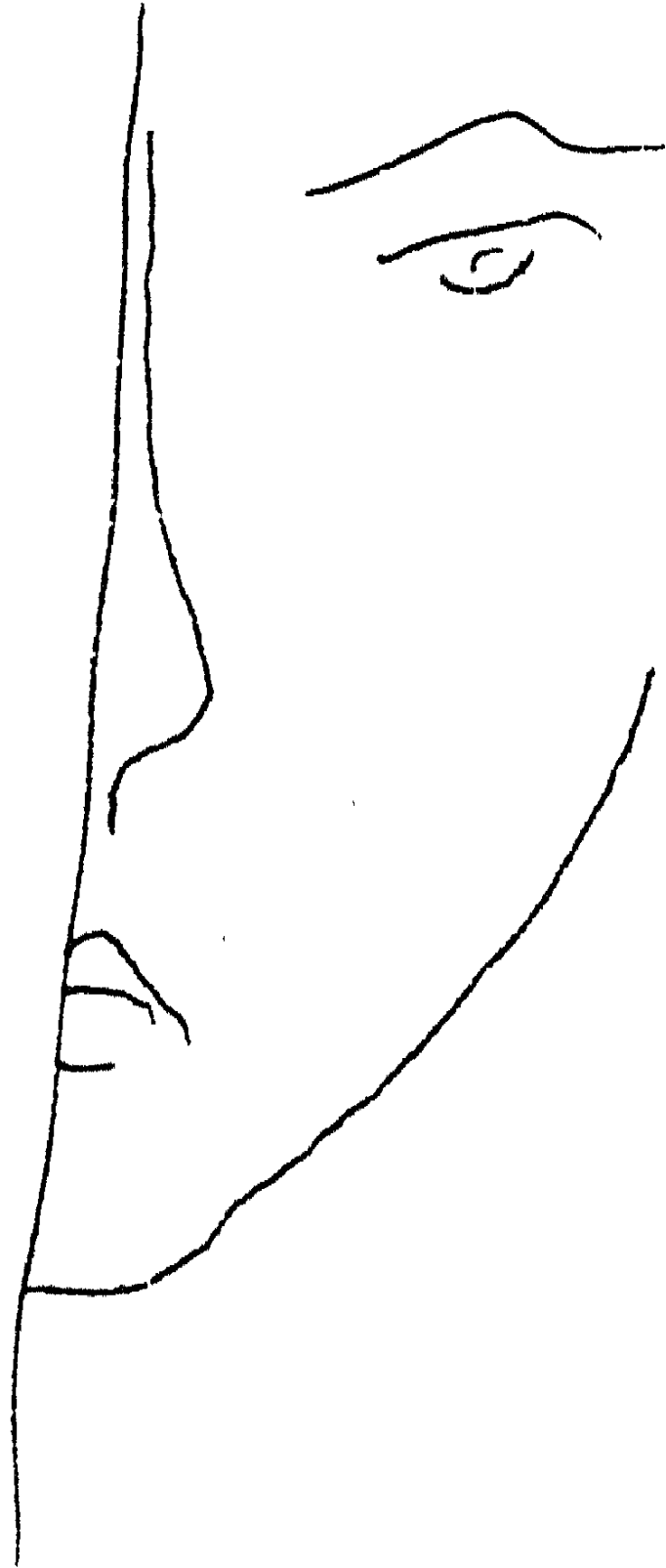
[37]

ख़ुद टूटी है
वह ऋतु मुझसे
जब रूठी है

[38]

होंगे उनके
ज़मीन आसमान
हम अपने
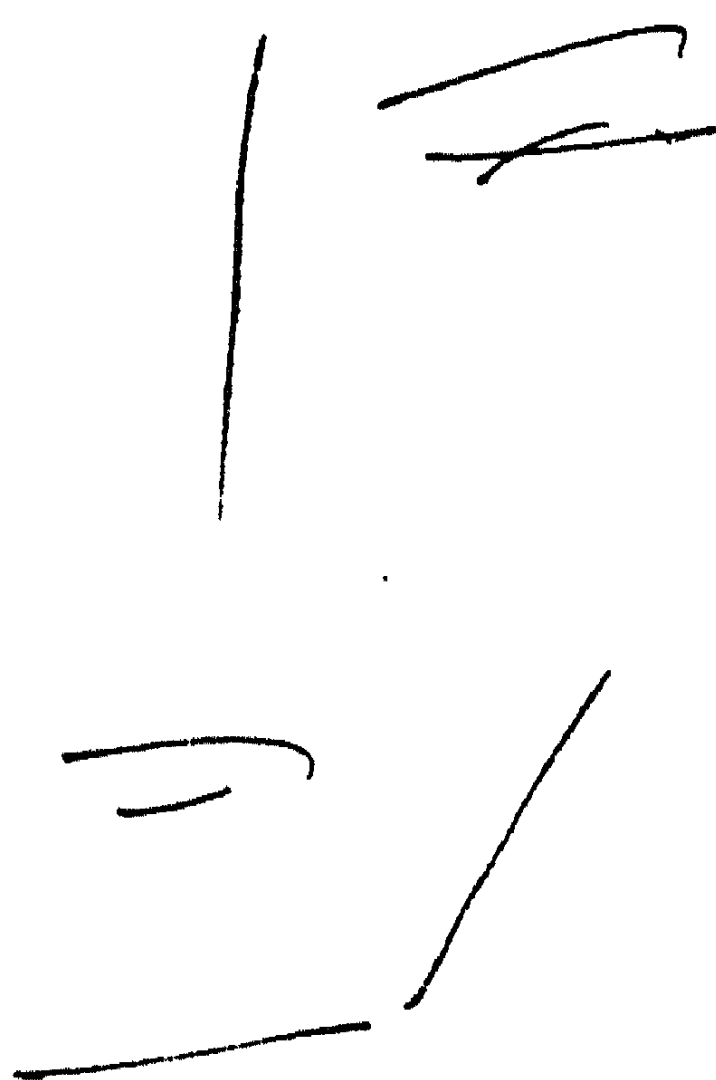
[39]

ध्यान में तुम
गुमान में तुम हो
मैं कहाँ हूँ

[40]

सपने अब
दबे पाँव आते हैं
न जाने कब

[41]

यादों की पर्त
गरमाती धूप में
काँच की छत

[42]

संग का डर
मेरे अपने ख़्वाब
काँच के घर
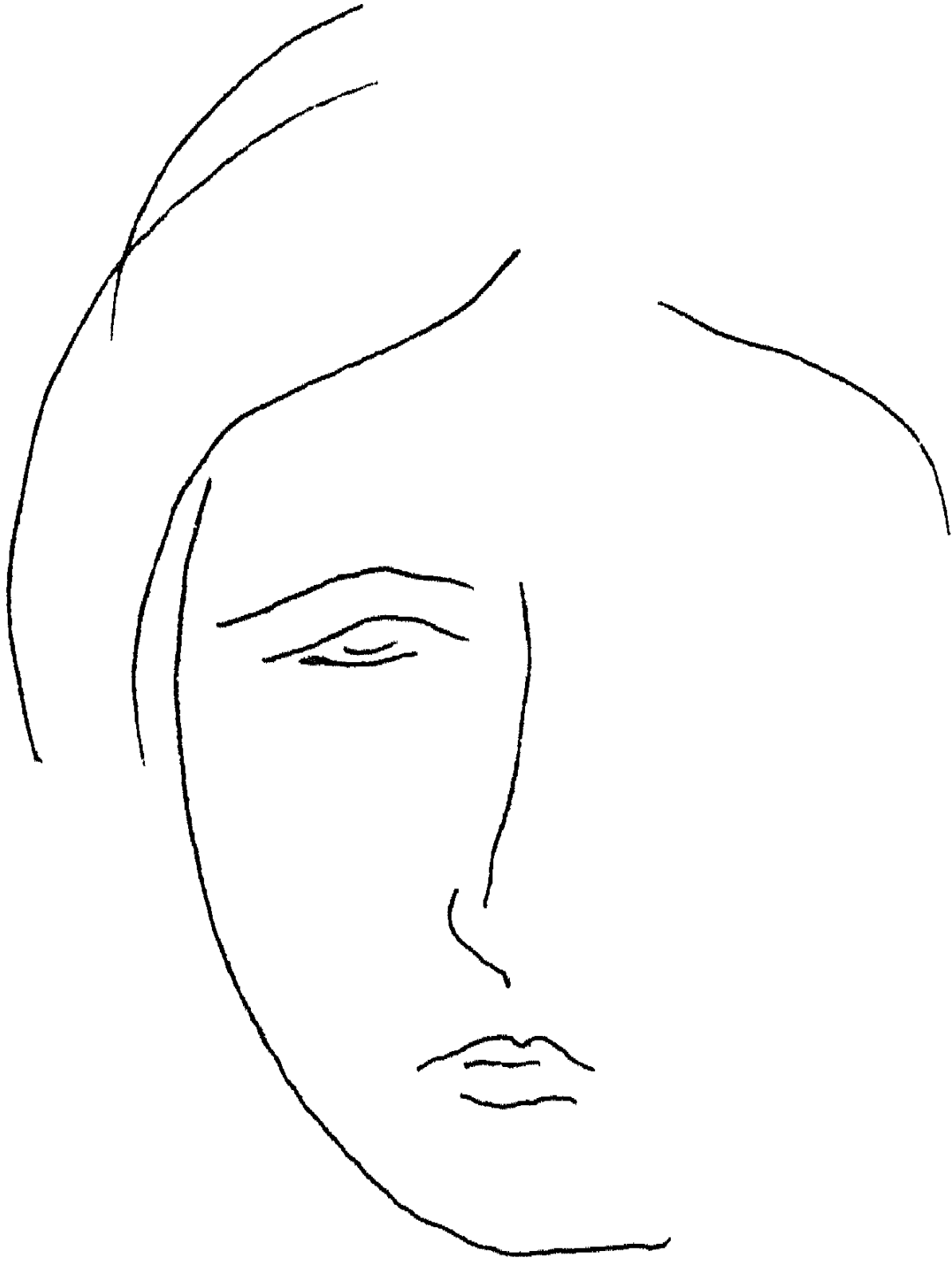
[43]

आकाश नीला
देहरी पर धूप
आँगन गीला

[44]

दर्द की काया
पेड़ से उतरती
चाँद की छाया

[45]

पत्ते गिरेंगे
मौसम के पृष्ठों पे
गीत छपेंगे
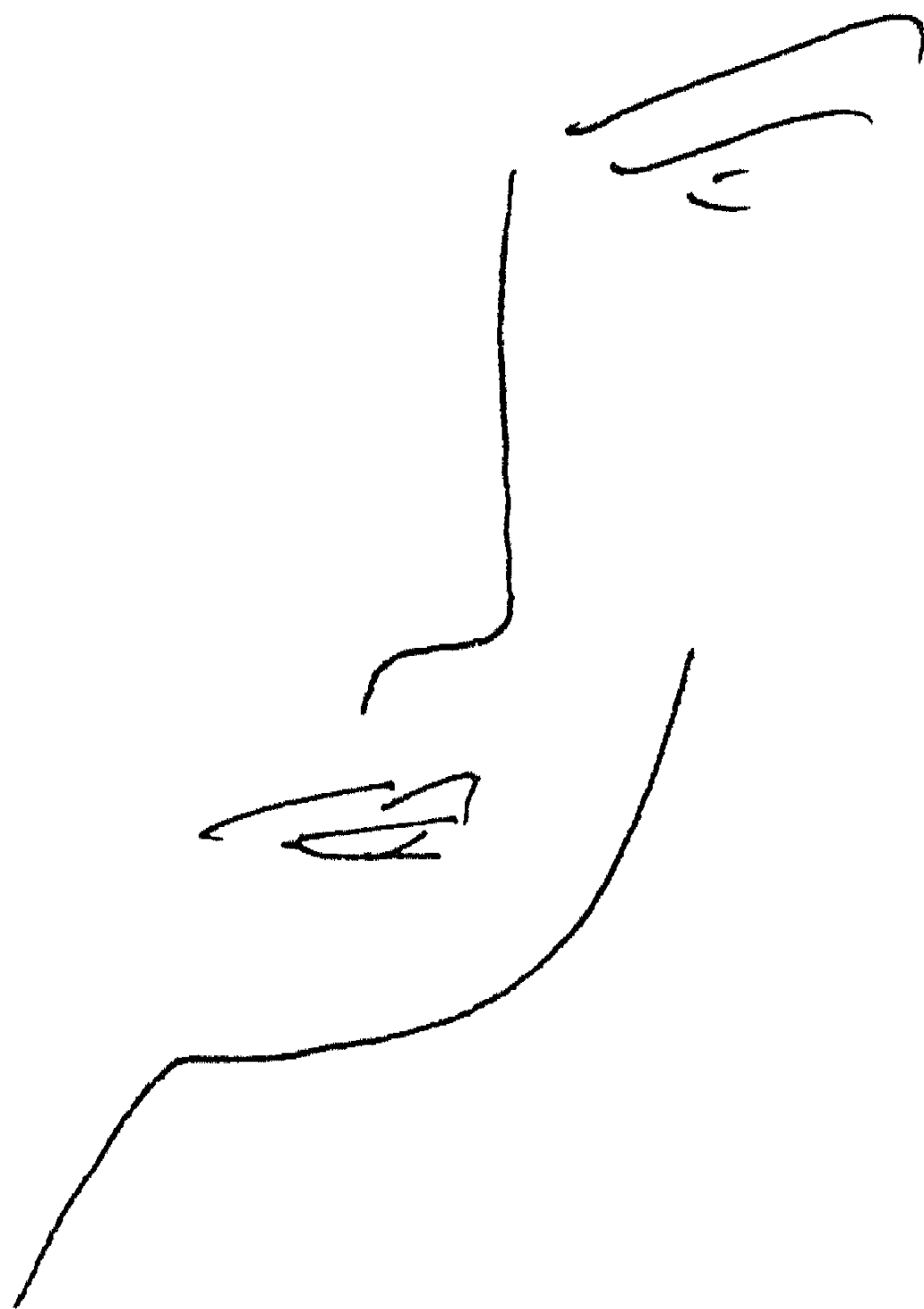
[46]

ऐसा भी हुआ
वह मुझे जीने की
दे गया दुआ

[47]

बूँदें टपकीं
कच्ची छत भी बोली
सावन आया

[48]

पिछली बातें
मन पर उतरीं
बोझिल रातें
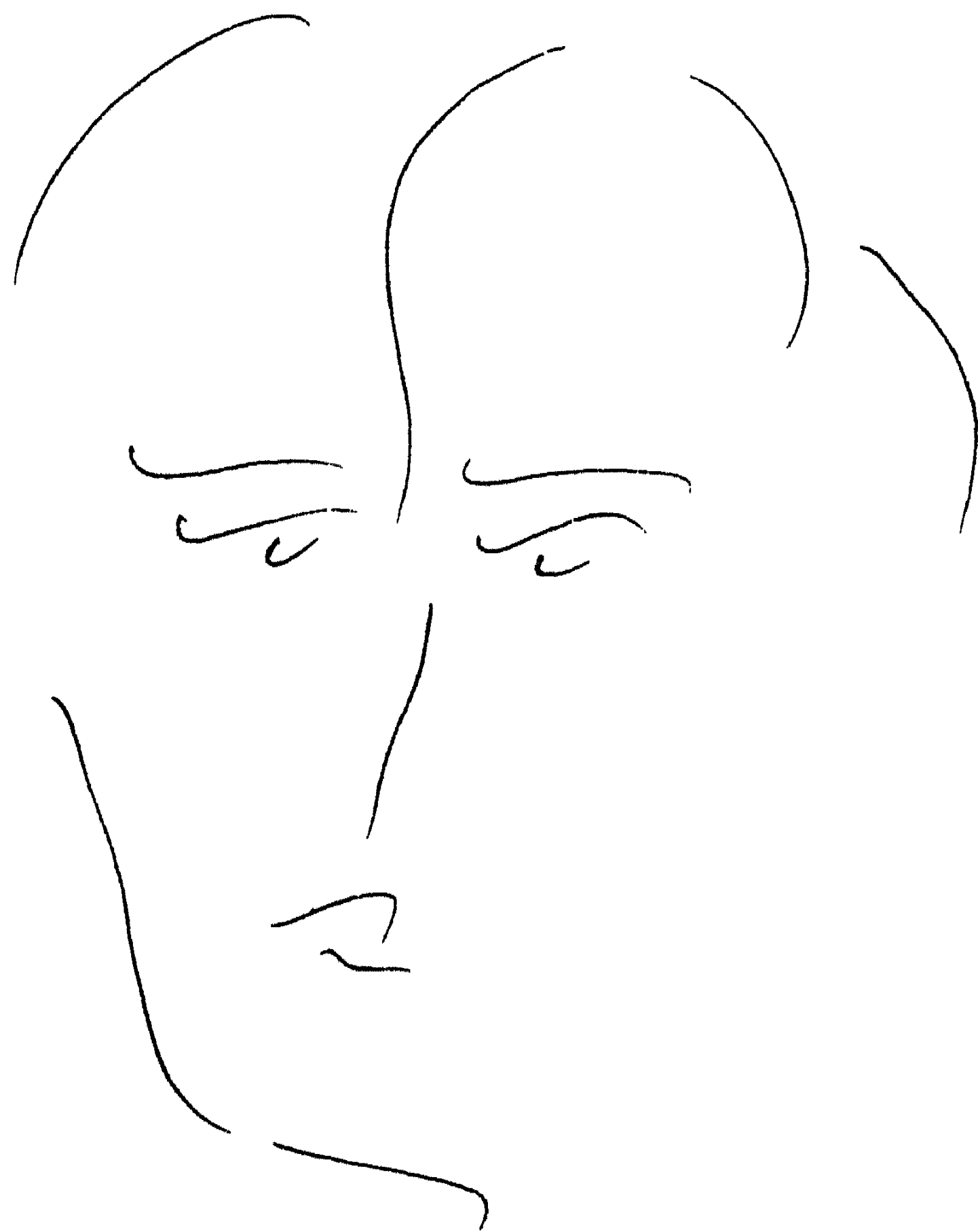
[49]

है खील-खील
जल-दर्पण, मन
बेचैन झील
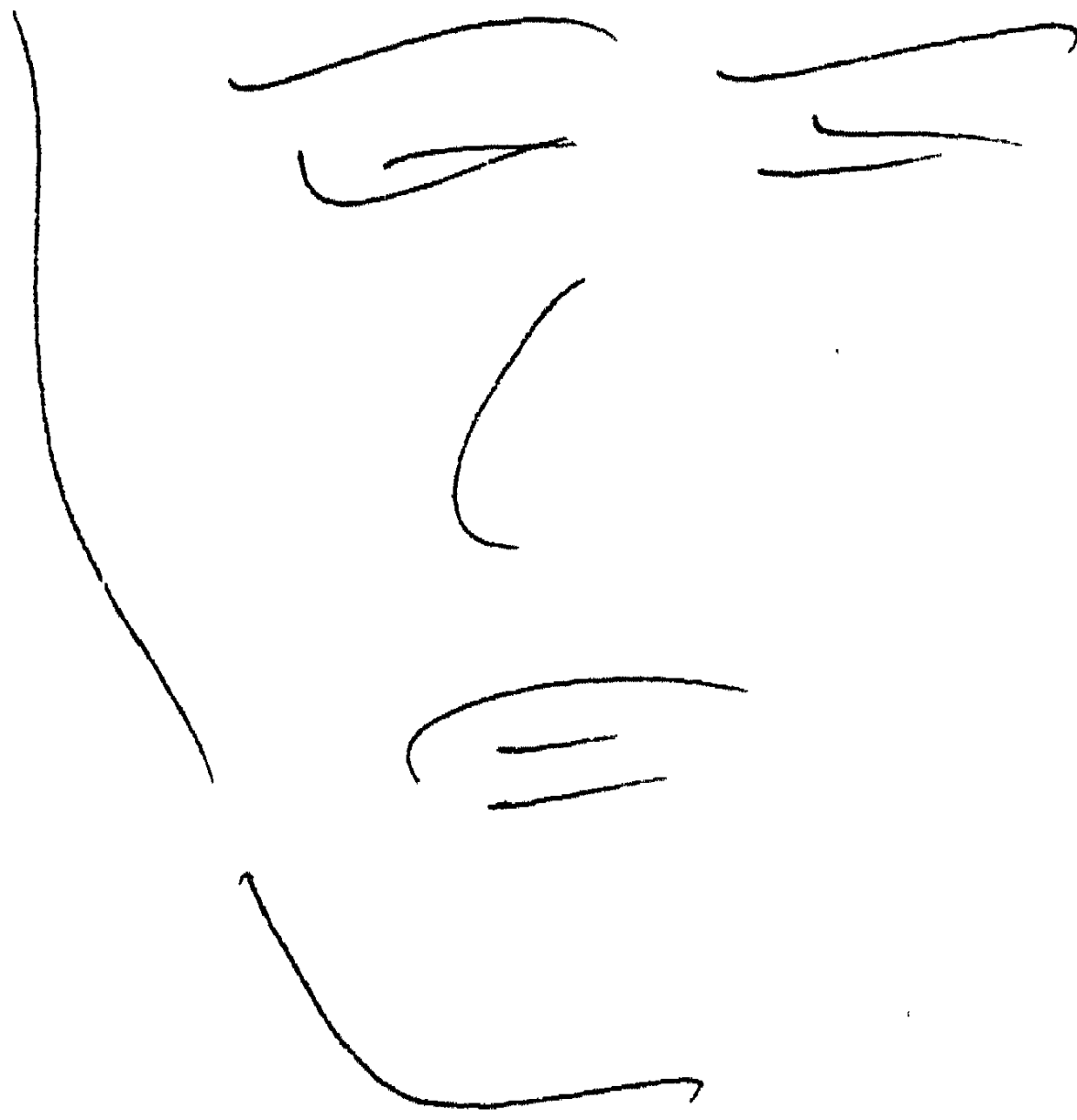
[50]

व्यथित आत्मा
दर्द उड़ेले किसी
पेड़ पे श्यामा

[51]

दर्द में भीगे
अलगनी पे टँगे
हम कपड़े
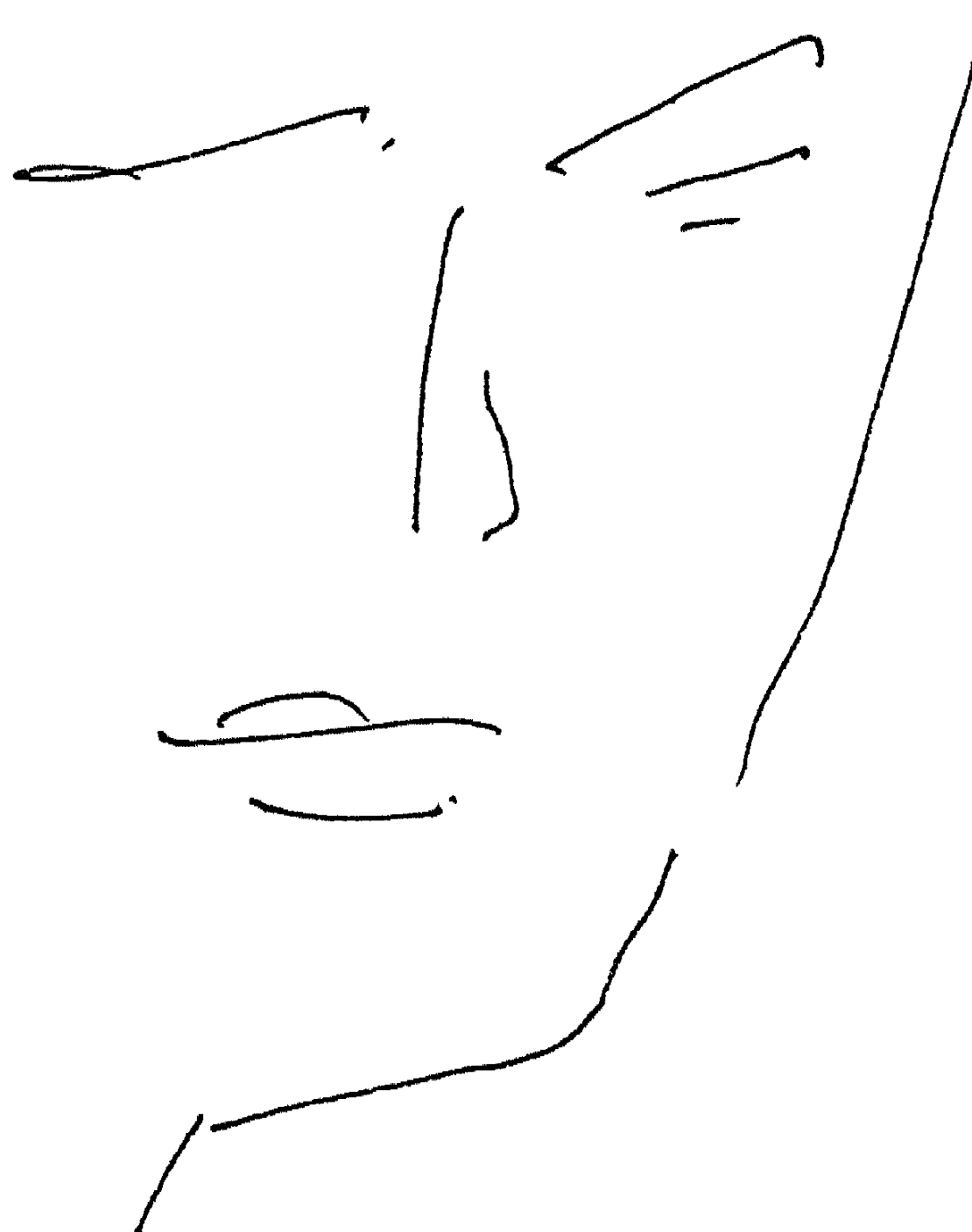
[52]

बात-बात में
हम दिन हो गये
रात-रात में

[53]

सर्द चाँदनी
हरे–भरे वृक्षों को
पडी बाँचनी
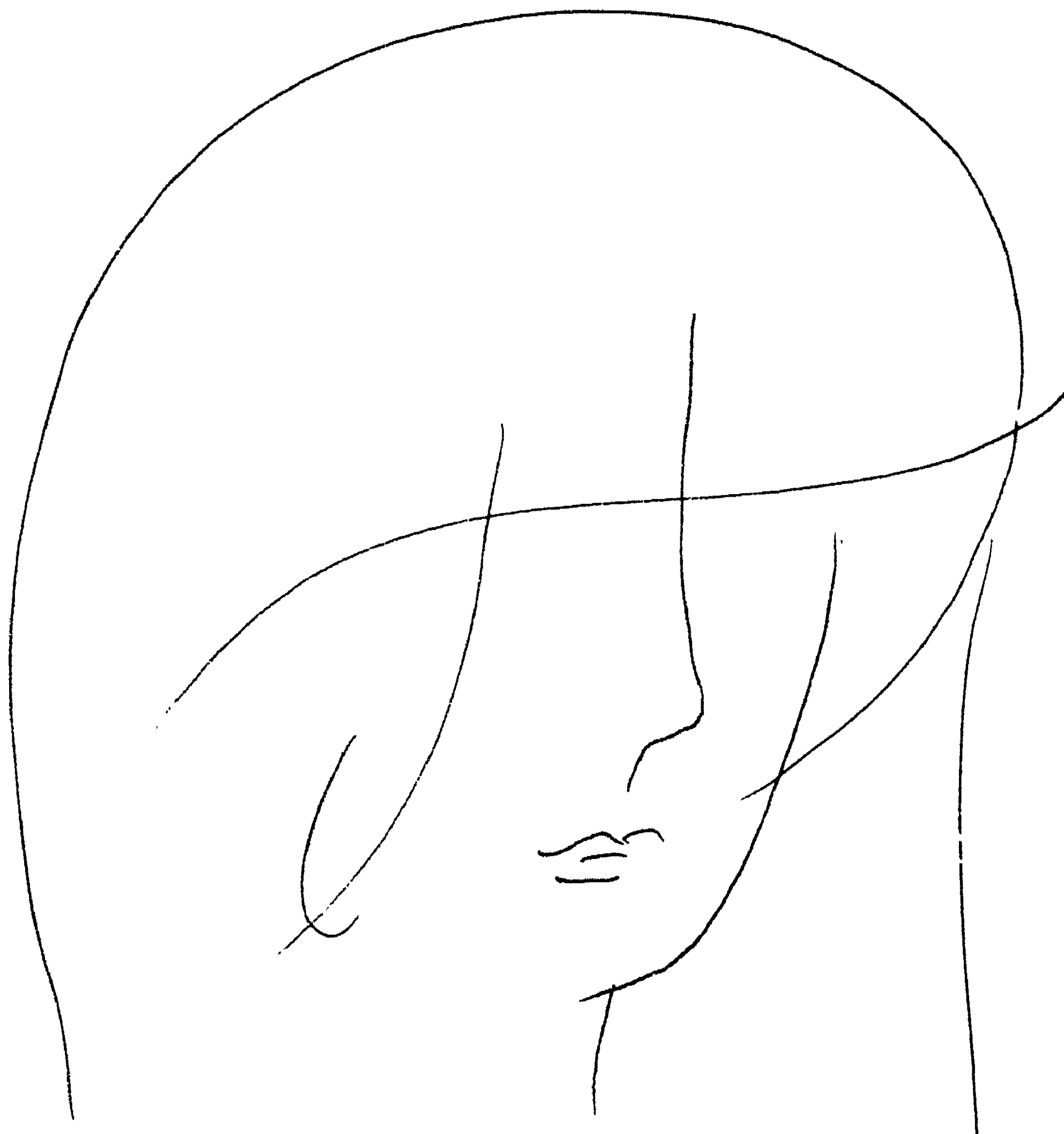
[54]

यूँ दिन ढला
बादलों की आड़ में
सूरज चला

[55]

घनी उदासी
धनक क्षितिज पे
बात ज़रा सी

[56]

जीवन फ़ानी
जैसे गर्म तवे पे
जलता पानी